प्रेम की ओर . . .

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

प्रेम है प्रेम है प्रेम है प्रेम। केवल प्रेम ही प्रेम की कहानी है। केवल प्रेम ही प्रेम का गीत है। केवल प्रेम ही प्रेम की उपमा है। केवल प्रेम ही प्रेम का उद्धार कर सकता है। केवल प्रेम में ही तुम्हें प्रेम की ओर ले जाने की क्षमता है। केवल प्रेम ही प्रेम में और अधिक प्रेम उँडेल सकता है। केवल प्रेम ही तुम्हें यह ज्ञात करा सकता है कि प्रेम की शक्ति से बढ़कर और कुछ भी नहीं।

प्रेम की विजय हो। प्रेम का प्रभुत्व हो। प्रेम इस जगत को, ब्रह्माण्ड-प्रदत्त इस बहुमूल्य अक्षय-निधि को पुनःस्थापित करे।

~ गुरुमाई

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।